सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन इवैंजलिकल फैलोशिप। (LEF,Chennai)

मार्च-अप्रैल, 2004

त्याग भरा प्रेम

एक नन्हें लड़के के पास एक कनारी चिड़िया (पीले पंखो वाली गाने वाली चिड़िया) थी, जिससे वह बहुत प्रेम करता था। लड़के की माँ बिमार हो गई, और चिड़िया का गाना उसे बहुत परेशान करता था। उस लड़के को उसकी माँ ने बताया कि उस चिड़िया का गाना उसे बहुत कष्ट पहुँचा रहा है। वह लड़का गया और उसने वह चिड़िया अपने चचेरे भाई की दे दी, और वापस घर आकर उसने अपनी माँ को कहा कि वह चिड़िया अब कभी उन्हें तंग नहीं करेगी क्योंकि उसने चिड़िया को किसी को भेंट में दे दिया है।

'लेकिन क्या तुम उससे बहुत प्रेम नहीं करते थे?'

माँ ने उससे पूछा, 'तुम कैसे उससे जुदा हुए?' 'हाँ', उसने जवाब दिया, ' लेकिन मैं आपसे उससे भी अधिक प्रेम करता हूँ। मैं ऐसी किसी भी चीज से प्रेम नही कर सकता जो आपको दर्द पहुँचाए।'

हमें परमेश्वर से वैसे ही प्रेम करना चाहिए, जैसे इस लड़के ने अपनी माँ से किया। दूसरी किसी भी चीज से बढ़ कर और वह हर बात जो उन्हें दुःख पहुँचाती है, हमें छोड़ देनी चाहिए चाहे हम उसे कितना भी क्यों न चाहते हों।

-चुना हुआ।

मृत्युंजय ख्रिस्त

ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

परमेश्वर की इच्छा से भटकना

योना (१:९-१२) 'उस ने उन से कहा, मैं ईब्री हूं, और स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा जिस ने जल-स्थल दोनों को बनाया है, उसी का भय मानता हूं। तब वे अत्यंत डर गए, और उस से कहने लगे, तू ने यह क्या किया है? वे जान गए थे कि वह यहोवा के सम्मुख से भाग आया है, क्योंकि उस ने स्वंय उनको बता दिया था। तब उन्हों ने उस से पूछा, हम तेरे साथ क्या करें जिस से समुद्र शान्त हो जाए? उस समय समुद्र की लहरें बढ़ती ही जा रहीं थीं। उस ने उन से कहा, मुझे उठाकर समुद्र में फेंक दो, तब समुद्र शान्त पड़ जाएगा, क्योंकि मैं जानता हूं, कि यह भारी आंधी तुम्हारे ऊपर मेरे ही कारण आई है।'

कई लोग इस बात को नहीं जानते की उनके जीवन, परिवार तथा कलीसिया में तूफान उन्हीं के कारण आया है। यह दुःख की बात है कि आप दूसरों के लिए हानि का कारण बने हुए हैं। यहाँ पर एक नबी दूसरों को हानि पहुँचा रहा था। वह परमेश्वर की उपस्थिति से दूर भाग रहा था। वह व्यक्ति जो जीवित परमेश्वर को जानता है परन्तु उनकी इच्छा पर नहीं चलता, दूसरों को हानि पहुँचता है। जब हम पवित्र आत्मा द्वारा परमेश्वर के राज्य में पैदा होते है, हमारे कंधों पर दूसरों की जिम्मेवारी आती है। यदि आप इसे न समझो तो दूसरों के जीवन में तूफान लाओगे। एक महिला हमारी सभा मे यह कह कर अंगीकार कर रही थी, 'मैं जानती हूँ कि मेरे पाप के कारण ही मेरे दो बच्चे मर गए।' हम यह प्रार्थना करते है, 'तेरी इच्छा धरती पर वैसे ही पूरी हो जैसी स्वर्ग में पूरी होती है।' लेकिन क्या हम उनकी इच्छा पूरी कर रहे हैं ? क्या तुम्हारा घर परमेश्वर का राज्य है? क्या तुम्हारी कलीसिया ऐसी है ? तब क्यों हम प्रभु यीशु द्वारा सिखाई इस प्रार्थना को दोहराते है? जब कोई व्यक्ति प्रभु (यीशु) के पास आता है, तो उसके लिए अगला कदम है परमेश्वर की इच्छा पूरी करना। हरेक व्यक्ति के लिए जो परमेश्वर के राज्य में पैदा होता है, परमेश्वर द्वारा उसके जीवन की योजना तैयार की जाती है। जब तुम मन फिराते हो तो जान लो कि परमेश्वर ने तुम्हारे लिए योजना तय की हुई है।

योना परमेश्वर की इच्छा से बाहर जा रहा था, परन्तु परमेश्वर ने उसे अपनी इच्छा में दुबारा बुला लिया। परमेश्वर ने गिदोन को अपनी योजना में भाग दिया। परमेश्वर ने शाऊल को नया मन दिया। लेकिन शाऊल परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं चला। इस कारण वह अपने ही घराने पर तूफान लाया और उसका घराना नाश हुआ। शाऊल को शमुएल नबी के साथ संगति करने का विशेषाधिकार प्राप्त था। लेकिन उसने वह संगति तोड़ दी। सावधान रहो, कहीं ऐसा तो नहीं की जो जिम्मेवारी परमेश्वर ने तुम्हें सौंपी है उसके विषय में तुम उन्हें दुख पहुँचा रहे हो। यदि तुम उनकी इच्छा से अलग जा रहे तो तुम अपने परिवार में दुःख, मृत्यु और पागलपन ला रहे हो।

कुछ लोग मन फिराने में अधूरे रह जाते हैं और वे पलट कर उल्टे मार्ग पर चल, परमेश्वर के राज्य को बहुत हानि पहुँचाते हैं। परमेश्वर चाहते हैं कि तुम अनंत मूल्य की बातों में लगे रहो। लेकिन तुम परमेश्वर कि इच्छा के विपरीत जा सकते हो। जो लोग परमेश्वर की इच्छा के बाहर हैं और जो अधर्मियों और विधर्मियों के साथ धनिष्टता रखते हैं, वे खतरे के मार्ग पर हैं। कुछ लोग ऐसों के साथ धनिष्ट संबंध रखे हैं जो हमेशा परमेश्वर के जनों की बुराई करते रहते हैं। उनके घर नरक बन जाएँगे।

यूसुफ आजीवन परमेश्वर की इच्छा में बना

पृष्ठ ३ पर..क्रमशः...

क्षमा की भेंट

मैं आपको अपने ही परिवार का एक अनुभव सुनाता हूँ। चौदह बरस की आयु से पहले की एक ही घटना मुझे याद है वह है मेरे पिताजी की मृत्यु। उनका व्यापार नहीं चला और ठप्प हो गया। उनकी मृत्यु के कुछ समय बाद ही साहूकार आये और घर से सब कुछ ले गए। मेरी माँ के कंधो पर बड़े परिवार का सारा बोझ आ पड़ा। एक के बाद एक परिवार पर विपत्ति आती गई। घर पर जुड़वाँ बच्चे पैदा हुए और मेरी माँ बिमार हो गई। घर का ज्येष्ठ लड़का १५ साल का था और मेरी माँ ने उस पर भरोसा रखा था कि वह इस कठिनाई के समय उसका सहारा बनेगा, लेकिन अचानक वह लड़का इधर-उधर भटकने लगा। वह बेकार के उपन्यास पढ़ने लगा, और अचानक उसके मन में यह विचार घर कर गया कि अमीर बनने के लिए उसे घर से दूर जाना होगा। वह घर छोड़ कर चला गया।

मुझे याद है कि मेरी माँ बड़ी उत्सुकता से उसके समाचार की प्रतीक्षा में रहती थी, वह हमें यह देखने के लिए डाकघर भेजती कि कहीं उसका कोई पत्र आया हो और मुझे याद है कि हम निराशा की खबर के साथ घर वापस लौटते थे, 'कोई चिठठी नहीं।', आकर माँ को कहते। मुझे याद है कि कैसे शाम के समय हम घर पर बैठ कर (न्यू इंग्लैण्ड-अमेरिका में एक स्थान) अपने पिता के बारे में बातें किया करते, लेकिन जैसे ही भाई का नाम लिया जाता, वह हमें चुप कर देतीं। ऐसी रातों में जब तेज आंधी चल रही होती, और हमारा घर जो पहाड़ी पर था, हर हवा के झोंके पर हिल जाता, मेरी माँ उस बेटे के लिए प्रार्थना कर रही होती जिसने उसके साथ सही व्यवहार नहीं किया था।

मैं ऐसा सोचा करता था कि वह उससे हम सबसे बढ़ कर प्रेम करती थीं, और मुझे विश्वास है यह सच था। एक -धन्यवाद दिन - के दिन (यह न्यू इंगलैण्ड राज्य में पारिवारिक दिन भी है, जब सारा परिवार इकट्ठा होता है।) - वह उसके लिए एक कुर्सी रखती, यह सोचते हुए कि वह वापस घर आयेगा। परिवार में सब बढ़ते गए और लड़के घर से जाते रहे।

मैंने सारे देश में चिठ्ठियाँ भेजी परन्तु उसका कुछ पता नही चला। एक दिन बोस्टन शहर में मुझे खबर मिली कि वह घर पहुँच गया है।

मुझे याद है कि कैसे उस शहर में, मैं उसे हर दुकान पर खोजा करता था - उसके चेहरे पर एक निशान था - लेकिन मुझे कभी उसका पता नहीं चला। एक दिन जब मेरी माँ दरवाजे के पास बैठी थी, एक अजनबी घर की ओर आता दिखाई पड़ा और जब वह घर पर पहुँचा, वह दरवाजे के सामने रूक गया। मेरी माँ ने अपने बेटे को नहीं पहचाना। वह हाथ बांधे खड़ा रहा, उसकी लम्बी दाड़ी छाती पर आ रही थी, आँखों से आंसू चेहरे पर बह रहे थे। जैसे ही मेरी माँ ने उसके आँसू देखे वह चिल्लाई, 'अरे, यह मेरा खोया हुआ बेटा है', और उसे अंदर आने को कहने लगी। लेकिन वह वहीं खड़ा रहा और बोला 'नहीं, माँ, मैं घर में तब तक कदम नहीं रखूँगा जब तक मैं यह न सुन लूँ कि तुमने मुझे माफ कर दिया है।'

क्या आप सोचते हो कि वह उसे माफ नहीं करेगी? क्या आप सोचते हो कि वह उसे देर तक दरवाजे पर ही खड़ा रखेगी? वह तेजी से देहलीज पर आई और उसे अपनी बाहों मे लपेट लिया और क्षमा दर्शाई।

-डी. एल. मूडी।

झरने और दर्रे

जब मैं छोटा बालक था, तो मेरे माता-पिता हमें नियागरा झरने दिखाने ले गए। हम 'धुंध की सुन्दरी' नामक नौका पर बैठ झरने के ठीक नीचे पहुँचे, और मेरे पिता मुझे झरने के नीचे गुफा के अंदर ले गए, जहाँ कुछ भाग काट कर खोला हुआ था। वह दृश्य डरावना था, ऐसे शक्तिशाली झरने से कुछ इंच ही दूर, शायद मृत्यु से भी उतनी दूर, झरने का तेज शोर कानों को बहरा कर रहा था, और जमीन उस साठ लाख गैलन प्रति मिनट की गति से गिरते पानी के कारण थरथरा रही थी, वह नीचे १७० फीट की गहराई में गिर रहा था।

दूसरी छुट्टियों में, हम 'ग्रेट केनयान' देखने गए मुझे अब भी याद है, जब मैं किनारे पर खड़े होकर नीचे खाई को देख रहा था, वह डराने वाला दृश्य, शानदार, सिर चकराना, और बहुत डर। वह परमेश्वर के भय के समान है। वह कोई कमजोर करने वाला भय नही है। लेकिन परमेश्वर की उपस्थिति याद दिलाने वाला।

यदि ऐसे झरने और दर्रे को देख हमारे अन्दर भय पैदा होता है तो इससे बढ़कर प्रभु के प्रति हमारे मन में कितना अधिक भय होना चाहिए, जो लाखों गुणा इन झरनो से शक्तिशाली है और करोड़ों गुणा पवित्र और खरबों गुणा दर्रों से बढ़कर भययोग्य।

यही परमेश्वर का भय है जो हमारे जीवन को पाप से दूर रखता है और हमें बुद्धि में स्थापित करता है। -रॉबर्ट मॉर्गन।

Beautiful Books

First Floor, Victoria Hotel
Near GPO
CST, Mumbai
Phone : (022) 5633 4763
9:30 AM - 7:00 PM, Sunday Closed

पृष्ठ १ से..परमेश्वर की इच्छा

रहा। वह अपने दुःखों में भी आनन्दित रहा। फिलिप्पियों (४:१२) 'मैं दीन-हीन दशा तथा सम्पन्नता में भी रहना जानता हूं, हर बात और प्रत्येक परिस्थिति में मैंने तृप्त होना, भूखा रहना, और घटना-बढ़ना सीख लिया है।' अपनी वर्तमान स्थिति में संतुष्ट रहना महान बात है। १ तीमुथियुस(६:६) 'परन्तु संतोष सहित भक्ति भाव वास्तव में महान् कमाई है।'

यदि तुम्हारा मन आनंद और दुःख में संतुष्ट है, कमी में या भरपूरी में, यह सच्चा मसीही जीवन है। यूसुफ हमेशा परमेश्वर के साथ चला - तब भी जब गढ़े में फेंका गया, पोतीफर के घर में गुलाम बन कर रहते हुए भी, जेल में झूठे आरोप के कारण दण्ड भुगतते हुए और साथ ही मिस्र के सिंहासन पर भी। परमेश्वर यूसुफ के साथ थे और यूसुफ परमेश्वर के साथ था। तुम परमेश्वर के साथ, उनकी इच्छा पर चल कर ही रह सकते हो। तब तुम न तो अपने जीवन में, न दूसरों पर तूफान लाओगे। तुम परमेश्वर की बहुतायत आशीष दूसरों पर लाओगे। परमेश्वर की इच्छानुसार जीवन जीना, कठिन जीवन है।

एक समय जब में जवान था, मुझे भोज का निमंत्रण आया। लेकिन उस भोज के जरा पहले परमेश्वर ने मुझे उपवास रख प्रार्थना करने को कहा। मैंने आज्ञा मानी। एक बार परमेश्वर ने मुझे बड़े सादे कपड़े पहनने को कहा। उन दिनों भड़कीले कपड़े पहनने का चलन था। लोग मुझे देख हंसते। कईयों ने सोचा मैं पागल हो गया हूँ। लेकिन उस पहनावे ने मेरी भलाई की।

यशायाह (५३:१०) ' तोभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले, उसी ने उसको रोगी कर दिया, जब तू उसका प्राण दोषबलि करे, तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा, उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।' जो परमेश्वर की इच्छा में हैं, प्रभु यीशु समान दूसरों के पापों का बोझ अपने ऊपर लेते हैं। वह दूसरों की तकलीफों में भागीदर बनते हैं। जो इस राज मार्ग पर चलते हैं उनकी सुरक्षा स्वर्गदूतों, मुख्य दूतों द्वारा की जाएगी। स्वर्ग उनके साथ रहेगा। -एन दानिएल।

यीशु का सर्व-सामर्थी लहू

ब्रिटेन की महान रानी विक्टोरिया, जिसने ब्रिटेन के विस्तृत साम्राज्य पर राज किया, के विषय में यह सच्ची घटना मानी जाती है। जब वह बॉलमॉरल किले में रह रही थी, उसे पड़ोसी ग्रामिणों के घर जाकर उनसे मिलने की उसकी आदत थी।

एक वृद्ध पहाड़ी महिला जो इन भेंटो से काफी सम्मानित महसूस कर रही थी और वह प्रभु यीशु पर विश्वास करती थी, वह इस रानी की आत्मा के प्रति चिन्तित थी।

साल का अन्त आया और रानी इस वृद्ध माहिला (जो अपने प्रभु को जानती थी) के गरीब घर में आखिरी बार मिलने आई। जब विदा ली जाने लगी, इस वृद्ध ग्रामीण ने डरते हुए पूछा, 'माननीय रानी साहिबा, क्या मैं आपसे एक प्रश्न कर सकती हूँ?'

'हाँ', रानी ने उत्तर दिया, ' जितने तुम चाहो उतने सवाल कर सकती हो।'

'क्या रानी साहिबा मुझसे स्वर्ग में मुलाकात करेंगी?'

एक दम अतिथि ने उत्तर दिया, 'ज़रूर, यीशु के सर्व सामर्थी लहू के कारण।' आश्वासन की केवल यही नींव है। कलवरी पर बहाया लहू सब वर्ग के लोगों को उपलब्ध है।

जब प्राचीन इस्राएल मिस्र देश छोड़ने पर था और आखिरी महा विपत्ति मिस्र पर आने वाली थी, परमेश्वर ने अपनों के छुटकारे के लिए एक मार्ग तैयार किया। उन्हें एक निष्कलंक मेमने का वध करना था, उसके लहू को घर के दरवाजों की चौखटों पर छिडकना था, घर के अन्दर घुस कर दरवाजा बन्द किये अन्दर रहना था। जब नाश करने वाला दूत, उस रात वहाँ से गुजरा, वह उस घर में नहीं धुसने दिया जाएगा जिसके चौखटों पर लहू छिड़का हो क्योंकि यहोवा ने कहा था, 'जब मैं लहू देखूँगा, मैं वहाँ से गुजर जाऊँगा'।

घर के अन्दर कुछ लोग डर से भरे होंगे और कुछ आंनद मना रहे होंगे, लेकिन सभी सुरक्षित थे। उनकी सुरक्षा उनकी भावनाओं या विचारों पर निर्भर नहीं थी बल्कि इस सत्य पर निर्भर थी कि जब परमेश्वर की दृष्टि मेमने के लहू पर पड़ेगी, वह उसके लिए पर्याप्त था और जिन्होंने वहाँ आसरा लिया हुआ था वे सुरक्षित थे। जिन्होंने परमेश्वर द्वारा दिये वचन को याद किया और उस पर भरोसा किया उनका मन आश्वासन से भरा होगा।

आज भी वैसा ही है। बहुत साल पहले हमारे छुटकारे के लिए कलवरी पर जब (यीशु मसीह का) लहू बहा था, वह हमें आज दिखाई नहीं देता लेकिन परमेश्वर के सामने आज भी वह बना है। जिस क्षण पश्चात्तापी पापी अपने उद्धार के लिए मसीह पर भरोसा लाता है, परमेश्वर उसे लहू छिड़के चौखट के पीछे सुरक्षित देखते हैं।

सत्य की परख!

नीतिवचन (४:१८)

"परन्तु धर्मियों का पथ भोर के प्रकाश के समान होता है,
जो दिन की पूर्णता तक अधिकाधिक बढ़ता जाता है।"

पृष्ठ ३

अपने पिता और माता का आदर कर

मैं इस बात पर पूरा विश्वास करता हूँ कि हमारे धरती पर जीवन की स्थिति, इस आज्ञा को हमने कैसे माना है, निर्भर करती है।

अपने पिता तथा माता का आदर कर (जोकि आशीष के साथ पहली आज्ञा है), ताकि तेरा भला हो और धरती पर तू दीर्घ आयु वाला हो।

पवित्र शास्त्र (बाइबल) इस आज्ञा के फल की कई प्रकार से व्याख्या करता है। व्यवस्थाविवरण (५:१६) 'अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जैसे कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे आज्ञा दी है, जिस से जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उस में तू बहुत दिन तक रहने पाए, और तेरा भला हो।'

'शापित है वह जो अपने पिता या माता का निरादर करता है।' 'जो कोई अपने पिता या माता का ठट्ठा करता है, उसका जीवन अंधकार से घिर जाएगा।'

इस तथ्य को साबित करने के लिए बाइबल से अनेक पदों को जोड़ा जा सकता है। घर पर आज्ञापालन और सम्मान एक व्यक्ति को अपने अफसर का सम्मान करने को तैयार करता है और उनमें दूसरे अच्छे गुण आते हैं जो व्यवसाय में उन्नति करने में सहायक ठहरते हैं। और वृद्ध होने पर सम्मान पाते हैं। माता-पिता की आज्ञा का पालन न करना अवनति के मार्ग की ढलान पर पहला कदम है। कई अपराधियों ने इस बात को स्वीकार किया है कि उनके जीवन में गलती का यही कदम, पहला कदम था। मेरी आयु लगभग साठ साल की है, मैंने यदि कोई और बात नहीं सीखी तो केवल यह बात सीखी है - कोई भी व्यक्ति अपने माता या पिता का निरादर करते हुए उन्नति नहीं कर सकता। हे नौजवान, हे नवयुवती तुम अपने माता-पिता से कैसा व्यवहार करते हो? मुझे यह बताओ और मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हारा जीवन कैसे बीतेगा। जब मैं किसी नौजवान को उसके बुर्जुग माता-पिता के विषय में बुरा-भला कहते सुनता हूँ, मैं कहता हूँ कि वह बहुत नीचे गिर गया है। जब मैं किसी नौजवान को बाहर समाज में बहुत शालीन व नम्र देखता हूँ, लेकिन वह अपने माता-पिता से अभद्रता से बात करता है, मैं उसके धर्म के पालन की और आँख भी नही करूँगा।

यदि धरती पर कोई आदमी या औरत जिसके साथ नम्रता तथा आदर का व्यवहार होना चाहिए, तो वे हैं प्रेमी माता तथा पिता। यदि वे तुम्हारे जीवन से आदर न पाएँ तो तुम्हारे पालन-पोषण करने में जो उन्होंने दुख तकलीफें झेली हैं उसका और क्या फल वे प्राप्त करेंगें?

याद करो कैसे तुम्हारे बचपन में उन्होंने तुम्हारी देखभाल की और तुम्हारा ख्याल रखा।

--- डी. एल. मूडी।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।

मृत्युंजय खिस्त

प्रेम महान् है

१ कुरिन्थियों (१३:१-८)

यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएं बोलूं पर प्रेम न रखूं तो मैं ठनठनाती घन्टी और झनझनाती झांझ हूँ। यदि मुझे नबूवत करने का वरदान प्राप्त हो और मैं सब भेदों तथा सब प्रकार के ज्ञान को जानूं, और यदि मुझे यहां तक पूर्ण विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा सकूँ, पर प्रेम न रखूं तो मैं कुछ भी नहीं हूं।यदि मैं अपनी संपूर्ण संपत्ति कंगालों को खिलाने के लिए दान कर दूं, और अपनी देह जलाने के लिए सौंप दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। प्रेम धैर्यवान है, प्रेम दयालू है, और वह ईर्ष्या नहीं करता। प्रेम डींग नहीं मारता, अहंकार नहीं करता, अभद्र व्यवहार नहीं करता, अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुराई का लेखा नहीं रखता, अधर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। सब बातें सहता है, सब बातों पर विश्वास करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धैर्य रखता है। प्रेम कभी मिटता नहीं। (यह प्रेम पवित्र आत्मा द्वारा दिया प्रेम है।)

पृष्ठ ४